राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ एक संयुक्त प्रेस वार्ता में प्रधानमंत्री का शुरूआती भाषण

12 नवम्बर, 2007
मास्को

भारत और रूस के बीच यह आठवीं वार्षिक शिखरवार्ता है और प्रधानमंत्री के रूप में रूस की मेरी यह चौथी यात्रा है । आपके बेहतरीन देश में एक बार फिर आकर मैं सचमुच प्रसन्न हूं । मेरे और मेरे साथ आए शिष्टमंडल का जिस गर्मजोशी के साथ स्वागत और आतिथ्य किया गया उसके लिए मैं राष्ट्रपतिजी को धन्यवाद देना चाहता हूं।

राष्ट्रपति पुतिन के साथ मेरी वार्ताओं के संदर्भ में मैं काफी संतुष्ट हूं । पारस्परिक हितों के सभी मुद्दों पर गर्मजोशी, सौहार्द और सर्वसम्मति का माहौल कायम रहा । हमने जिन मुद्दों पर जनवरी में पिछली शिखर वार्ता के दौरान चर्चा की थी, उनमें से कई मुद्दों पर काफी प्रगति हुई है । हमने विस्तृत चर्चा की है और दोनों देशों के बीच भविष्य में सहयोग के लिए कई क्षेत्रों की पहचान की है।

प्रधानमंत्री श्री जुबकोव के साथ भी मैंने विचारों का आदान-प्रदान किया है, जो उपयोगी और फलदायी है ।

हमने हमारे आर्थिक संबंधों को काफी हद तक सुधारने के तरीके पर चर्चा की, जिससे हमारी सामरिक साझेदारी काफी मजबूत होगी । हम इस बात पर सहमत हुए कि आपसी सहयोग के लिए काफी अवसर हैं ।

संयुक्त अध्ययन दल द्वारा दिए गए सुझावों और उन्हें लागू करने के लिए संयुक्त कार्य बल की स्थापना करने के बारे में चर्चा की ।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हम काफी समय से लंबित रुपये के ऋण कोष के मुद्दे का संतोषजनक हल निकालने में सक्षम हुए हैं । वर्ष 2010 तक हम 10 खरब अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार लक्ष्य को पाने के लिए अपने प्रयासों को दुगना करने पर सहमत हुए हैं ।

रूस के उद्योग जगत की अग्रणी हस्तियों और उच्च स्तरीय भारतीय वाणिज्यिक शिष्टमंडल के साथ शाम में मेरी मुलाकात होगी । मैं उनसे मांग करूंगा कि वे इस संबंध के लिए और भी अधिक निवेश करें । उच्च प्रौद्योगिकी अपार संभावनाओं का एक क्षेत्र है ।

चन्द्रायन-II के बारे में समझौता होना हमारे सहयोग का प्रतीक है, जिसमें वैज्ञानिक अध्ययन के संचालन के लिए एक ऑरबिटर, एक लैंडर और एक रोवर को शामिल करते हुए चांद के लिए एक संयुक्त अभियान शामिल है ।

ऊर्जा के बारे में हमने वार्ताएं जारी रखी हैं । हमारे नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम हेतु रूस के निरंतर सहयोग के लिए मैंने राष्ट्रपति पुतिन को धन्यवाद दिया । भारत के साथ नाभिकीय सहयोग के मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध हटाने में रूस के सहयोग लिए भी श्री पुतिन धन्यवाद के पात्र हैं ।

रक्षा के क्षेत्र में सहयोग हमारी सामरिक साझेदारी का एक मजबूत स्तम्भ है । पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों और बहुविध परिवहन विमान का साथ मिलकर विकास करने और उत्पादन करने का हमारा निर्णय प्रमुख अगला कदम है ।

हमने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे पर सकारात्मक चर्चा की । हमारे हितों में पारस्परिकता और संयुक्तता है । अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम में रूस की भूमिका का हम काफी महत्व देते हैं और प्रमुख मुद्दों पर इसके अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व को भी महत्व देते हैं ।

हमारे दोनों देश वर्ष 2008 में भारत में रूसी वर्ष और वर्ष 2009 में रूस मे भारतीय वर्ष के लिए उत्साहपूर्वक तैयारी कर रहे हैं । हमारी इच्छा है कि हम भारत में एक नये रूस को दर्शाएं और रूस में एक भारत को दर्शाएं ।

मैंने राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री जुबकोव, दोनों को भारत की यात्रा पर आने का न्यौता दिया है । हमारी सामरिक साझेदारी समय की कसौटी पर खरी उतरी है । आज की हमारी वार्ताओं के माध्यम से हमने विभिन्न क्षेत्रों की अपनी गतिविधियों और संबंधों को मजबूती प्रदान की है । अपनी इस यात्रा के परिणामों से मैं काफी संतुष्ट हूं ।

*****